जुमा का ख़ुत्बा

तारीख़: 7 रबी-उल-आख़िर 1448 हिजरी, बमुताबिक़ 18 सितम्बर 2026 ईस्वी

عادات دخيلة في الزواج والطلاق

शादी और तलाक की मनगढ़ंत रीतियां

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي شَرَّفَنَا عَلَى الْأُمَمِ بِالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ، وَقَوَّمَ بِهِ نُفُوسَنَا بَيْنَ الْوَعْدِ وَالْوَعِيدِ، لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ، تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، شَهَادَةً يَبْقَى ذُخْرُهَا عَلَى التَّأْبِيدِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أُولِي الْفَضْلِ وَالتَّسْدِيدِ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا إِلَى يَوْمِ الْمَزِيدِ: يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ (آل عمران: 102)

ऐ मुसलमानो! इस्लामी शरीयत के कुछ बुनियादी उसूलों में से एक महत्वपूर्ण उसूल यह है कि अल्लाह तआला ने बंदों के लिए दीन पर अमल करना आसान बनाया है और उन पर बिना वजह की सख्ती और तंगी को खत्म कर दिया है। यही वजह है कि पवित्र क़ुरआन और हदीसों में बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि दीन में आसानी को अपनाया जाए। अल्लाह तआला ने कहा:

{يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ} [البقرة: 185]

"अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का इरादा रखता है, तंगी का इरादा नहीं रखता।" (सूरह अल्-बक़रा: 185)

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

{وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ} [الحج: 78]

"और उसने दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी।" (सूरह अल्-हज: 78)

और नबी ﷺ का तरीका भी इसी उसूल पर क़ायम था। चुनांचे जब भी आपको दो कामों के बीच इख़्तियार दिया जाता तो आप हमेशा सबसे आसान रास्ते को

चुनते जब तक कि वह गुनाह न हो। और जब यह नियम सभी इबादतों और मामलों में लागू है, तो पारिवारिक मामलों में तो सबसे पहले इसे अपनाने की ज़रूरत है; क्योंकि परिवार समाज की इकाई है, और जब भी इसमें शरीयत की लाई हुई आसानी दाखिल होती है तो घर सुकून भरे हो जाते हैं, निकाह आसान हो जाता है, उसके खर्च कम हो जाते हैं, और तलाक के वक़्त अधिकार सुरक्षित हो जाते हैं।

लेकिन जब लोग शरीयत के तरीके को छोड़कर बनावटी रीति-रिवाजों और दूसरी कौमों से ली गई आदतों को अपना लेते हैं तो आसानी सख्ती में बदल जाती है, और जिस रिश्ते को अल्लाह तआला ने सुकून और मुहब्बत का ज़रिया बनाया था वह परेशानी और झगड़े का दरवाज़ा बन जाता है।

ऐ मुसलमानो!

बड़े अफसोस की बात है कि आज बहुत से लोगों पर अल्लाह का हुक्म नहीं बल्कि समाज के रस्म-ओ-रिवाज हुकूमत करते हैं। नौबत यहाँ तक पहुँच गई है कि ग़लत और बिगड़े हुए रीति-रिवाजों को दीन के स्पष्ट आदेशों पर इस बहाने से प्राथमिकता दे दी जाती है कि 'यह तो समाज में आम रिवाज है'। ताज्जुब है! क्या लोगों का काम और रिवाज ही सत्य और सच्चाई का पैमाना बन गया है? अल्लाह तआला ने कहा:

{وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ} [الأنعام: 116]

"और अगर आप ज़मीन के अक्सर लोगों की बात मानेंगे तो वे आपको अल्लाह की राह से गुमराह कर देंगे, वे लोग तो सिर्फ अटकल और अनुमान के पीछे चलते हैं और केवल अंदाज़ा लगाते हैं।" (सूरह अल्-अंआम:116)

चुनांचे कुछ लोग सुन्नत का विरोध करने से डरने के बजाय लोगों की बातों से ज़्यादा डरते हैं। इसी लिए उनमें से कोई कहने वाला कहता है: "मैं जानता हूँ कि यह बनावटी और बेजा बोझ है, लेकिन लोग क्या कहेंगे?" और इस तरह लोगों की सोच घरों पर हाकिम बन जाती है।

इमाम अबू नुऐम ने "हिल्या" में अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा:

لَا يَكُونُ أَحَدُكُمْ إِمَّعَةً

"तुम में से कोई आदमी 'इम्मअह' (दूसरों की हाँ में हाँ मिलाने वाला) न बने।" लोगों ने पूछा: "हे अबू अब्दुर्रहमान! इम्मअह क्या होता है?" आपने फरमाया:

يَقُولُ: أَنَا مَعَ النَّاسِ؛ إِنِ اهْتَدَوْا اهْتَدَيْتُ، وَإِنْ ضَلُّوا ضَلَلْتُ، أَلَا لِيُوَطِّنَنَّ أَحَدُكُمْ نَفْسَهُ عَلَى إِنْ كَفَرَ النَّاسُ أَلَّا يَكْفُرَ

"वह कहता है: 'मैं लोगों के साथ हूँ; अगर वे हिदायत पर हों तो मैं भी हिदायत पर हूँ, और अगर वे गुमराह हों तो मैं भी गुमराह हूँ। ख़बरदार! तुम में से हर एक को अपने मन को इस बात पर पक्का कर लेना चाहिए कि अगर लोग कुफ़्र करें तब भी वह कुफ़्र न करे।"

ऐ ईमान वाले भाइयो!

अल्लाह तआला ने पति पर महर वाजिब ठहराया है, और इसे पत्नी का शुद्ध अधिकार बनाया है। अल्लाह तआला ने कहा:

{وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا} [النساء: 4]

और औरतों को उनके महर ख़ुशदिली से दो, फिर अगर वे अपनी ख़ुशी से इसमें से कुछ हिस्सा तुम्हें माफ कर दें तो उसे मज़े से और शौक से खाओ।" (सूरह अन्-निसा:4)

आमतौर पर महर के साथ कुछ छोटे-मोटे उपहार भी दिए जाते हैं, जैसे कपड़े, गहने या खुशबूएँ; जिनका मक़सद सिर्फ दुल्हन का दिल खुश करना और उसे खुशी देना होता है, और हमारे समाज में उन्हें ही उपहार कहा जाता है।

लेकिन अफसोस! आज यह रस्म अपने असल मक़सद से हटकर एक ग़लत दिशा में चली गई है। यह प्यार-मोहब्बत के हल्के-फुल्के और स्वाभाविक अंदाज़ से निकलकर अब गर्व, शानो-शौकत और दिखावे का ज़रिया बन गई है। इसने परिवारों के बीच बाहरी शान-ओ-शौकत का एक ऐसा मुकाबला और अनावश्यक बोझ शुरू कर दिया है जो शरीयत की बुनियादी शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत है। इस्लाम तो हमें आसानी पैदा करने, फिजूलखर्ची और अहंकार से बचने, और लोगों में घमंड के रास्ते बंद करने की शिक्षा देता है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:

إِنَّ مِنْ يُمْنِ الْمَرْأَةِ تَيْسِيرَ خِطْبَتِهَا، وَتَيْسِيرَ صَدَاقِهَا، وَتَيْسِيرَ رَحِمِهَا

"औरत के मुबारक होने की निशानी में यह भी शामिल है कि उससे रिश्ता करना आसान हो, उसका महर आसान हो और उसका रह्म आसान हो।" (इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे हसन क़रार दिया है)

ऐ ईमान वालो!

आज के दौर में जिस चीज़ ने लोगों की कमर तोड़ रखी है, वह शादी से पहले और बाद के बेशुमार समारोहों का आयोजन है। निकाह होते ही दावतों का तांता बंध जाता है और जश्न के कई सिलसिले शुरू हो जाते हैं; यहाँ तक कि शादी खर्चों की एक न खत्म होने वाली ज़ंजीर बन जाती है।

खुशी मनाने और अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर करने में कोई बुराई नहीं है, क्योंकि यह शरीयत के अनुसार बिल्कुल जायज़ है; असल मसला बिना वजह के बनावटीपन,

अतिरेक (ग़ुलू) और रीति-रिवाजों की जकड़बंदियां हैं जिन्हें छोड़ने पर लोग ताने या शर्म महसूस करते हैं। और इस तरह वह खुशी जिसे इस्लाम ने अत्यंत आसान बनाया था, एक ऐसा भारी आर्थिक बोझ बन जाती है जो परिवारों को थका देती है, नौजवानों की शादियों में देरी का कारण बनती है और उन्हें अनावश्यक क़र्ज़ों के दलदल में धकेल देती है।

हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़िअल्लाहु अनहु पर पीले रंग का असर देखा तो पूछा:

مَا هَذَا؟

"यह क्या है?"

उन्होंने अर्ज़ किया: मैंने एक औरत से शादी की है और उसे एक गुठली के वज़न के बराबर सोना महर में दिया है। आपने कहा:

بَارَكَ اللَّهُ لَكَ، أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ

"अल्लाह तुम्हें इसमें बरकत दे, वलीमा करो चाहे एक ही बकरी के साथ क्यों न हो।" (इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

أَقُولُ مَا تَسْمَعُونَ وَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ لِي وَلَكُمْ، فَاسْتَغْفِرُوه إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा खुत्बा

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ، وَالشُّكْرُ لَهُ عَلَى تَوْفِيقِهِ وَامْتِنَانِهِ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ تَعْظِيمًا لِشَأْنِهِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ الدَّاعِي إِلَى رِضْوَانِهِ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَإِخْوَانِهِ.أَمَّا بَعْدُ:

ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरते रहो; क्योंकि उसका तक़वा (डर) अपनाने ही में दुनिया के अन्दर इंसान की असल कामयाबी और खुश-नसीबी है,

और यही चीज़ कल क़यामत के सफ़र के लिए हमारा सबसे बेहतरीन और क़ीमती तोशा है।

{يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ} [الحشر: 18]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर आदमी को देखना चाहिए कि उसने कल के लिए आगे क्या भेजा है, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम करते हो।" (सूरह अल्-हश्रः 18)

ऐ मुसलमानो!

जिस तरह निकाह जैसे पाकीज़ा रिश्ते में ऐसे अजीब-ओ-ग़रीब और ग़ैर ज़रूरी रस्म-ओ-रिवाज शामिल हो चुके हैं जिन्होंने लोगों की कमर तोड़ दी है, उसी तरह तलाक का मामला भी इन गढ़ी गई और रिवाज पा जाने वाली चीज़ों से महफ़ूज़ नहीं रहा, जिन्होंने तलाक के असल दीनी मक़सद को बिगाड़ कर रख दिया है।

इस्लाम में अगरचे ज़रूरत के वक़्त तलाक़ की इजाजत पाई जाती है, लेकिन हक़ीक़त में यह एक ऐसे संबंध का अंत है जो कभी बाहमी मुहब्बत और रहमत की बुनियाद पर कायम हुआ था; यही वजह है कि शरीयत ने तलाक़ के आस-पास ऐसे अख़लाक़ी आदाब का क़िला बाँधा है जो दोनों पक्षों की इज़्जत और सम्मान की हिफ़ाज़त करें, उनके हुक़ूक़ की सुरक्षा करें, और दिल में बदला लेने या बदला की आग भड़काने से सख्ती के साथ रोकें।

और इस मामले में सबसे बदतरीन और घिनौनी ईजाद वह चीज़ है जिसे 'तलाक की समारोह' कहा जाता है; जब कि वह वक़्त ग़म और दुःख में डूबा होता है, जिस नाज़ुक लम्हे में एक हँसता-बस्ता ख़ानदान बिखर जाता है और मासूम बच्चे बुरी तरह प्रभावित होते हैं, ऐसे छण को ख़ुशी मनाने और खुलकर प्रसन्नता का

इज़हार करने का मौका बना दिया जाता है! मानो एक मुसलमान घरौंदे का उजड़ना और बर्बाद होना ख़ुशी मनाने की कोई बहुत बड़ी वजह है!

और यह घटिया तरीक़ा शरीयत के उन सारे उद्देश्यों के बिल्कुल उलट है जिस ने पति-पत्नी के बीच जुदाई के इस कठिन वक़्त में भी एक-दूसरे के साथ भलाई और एहसान का रवैया रखने का स्पष्ट हुक्म दिया है। चुनांचे अल्लाह तआला ने कहा:

{فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ} [البقرة: 229]

"फिर या तो दस्तूर के मुताबिक रोकना है या अच्छे व्यवहार के साथ रुखसत करना है।" (सूरह अल्-बक़रा: 229)

लिहाज़ा यह हरगिज एहसान और नेकी की बात नहीं है कि तलाक जैसे संगीन मामले का स्वागत शोर-शराबे और दिखावे के शोर मचाने वाले तरीकों से किया जाए, और न ही इसे दिलों में द्वेष और कीना भड़काने या दूसरे फ़रीक़ का दिल दुखाने के लिए हथियार बनाया जाए।

इसके उलट, शरीयत का सिखाया हुआ सही तरीक़ा यह है कि ज़िंदगी के इस अफ़सोसनाक अध्याय को अच्छे अख्लाक़-ओ-आदाब, पर्दापोशी, एक-दूसरे के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और मासूम औलाद पर दया और रहम करते हुए अच्छे तरीके से ख़त्म कर दिया जाए।

इमाम मुस्लिम ने हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:

إِنَّ إِبْلِيسَ يَضَعُ عَرْشَهُ عَلَى الْمَاءِ، ثُمَّ يَبْعَثُ سَرَايَاهُ، فَأَدْنَاهُمْ مِنْهُ مَنْزِلَةً أَعْظَمُهُمْ فِتْنَةً، يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ: فَعَلْتُ كَذَا وَكَذَا، فَيَقُولُ: مَا صَنَعْتَ شَيْئًا، قَالَ: ثُمَّ يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ: مَا تَرَكْتُهُ حَتَّى فَرَّقْتُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ امْرَأَتِهِ، قَالَ: فَيُدْنِيهِ مِنْهُ وَيَقُولُ: نِعْمَ أَنْتَ». قَالَ الْأَعْمَشُ: أُرَاهُ قَالَ: فَيَلْتَزِمُهُ

"इब्लीस (शैतान) पानी पर अपना तख्त रखता है, फिर अपनी सेना भेजता है, तो उनमें से मक़ाम के एतबार से उसके सबसे क़रीब वह होता है जो सबसे बड़ा फितना बरपा करने वाला हो। उनमें से कोई आता है और कहता है: मैंने ऐसा-ऐसा किया, तो इब्लीस कहता है: तूने कुछ नहीं किया। फिर उनमें से कोई दूसरा आता है और कहता है: मैंने उसका पीछा नहीं छोड़ा यहाँ तक कि मैंने उसके और उसकी बीवी के बीच जुदाई डाल दी, तो इब्लीस उसे अपने करीब करता है और कहता है: हाँ तूने बहुत अच्छा काम किया है! (आमश ने कहा: मेरा ख्याल है कि आपने यह भी फरमाया:) और वह उसे गले लगा लेता है।"

एक ऐसा काम है जिसे इब्लीस पसंद करता है, तो आखिर इंसान इस पर कैसे खुशियाँ मना सकता है?! यह आदत अगरचे हमारे मुल्क में अल्हम्दुलिल्लाह प्रसिद्ध नहीं है लेकिन कुछ इस्लामी समाज में ज़ाहिर हो चुकी है और सोशल मीडिया के ज़रिए इसका प्रचार किया गया है।

ऐ खुश नसीब लोगो!

निकाह और तलाक ज़िंदगी के महत्वपूर्ण मामलों में से हैं, और इसीलिए इस्लाम ने उन्हें मन की इच्छाओं और बदलते हुए रिवाजों के रहम-ओ-करम पर नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें ऐसे अहकाम में लपेट रखा है जो दीन की हिफ़ाज़त करते हैं, पारिवारिक नियम को बचाते हैं और इसमें भलाई और बेहतरी को यकीनी बनाते हैं।

समाज के जो रस्म-ओ-रिवाज शरीयत के मुताबिक हों वे क़ाबिल-ए-तारीफ और क़ाबिल-ए-क़ुबूल हैं, लेकिन जो तरीके अल्लाह के दीन और उसके प्यारे नबी ﷺ के बताए हुए रास्ते के ख़िलाफ हों, उनकी शरीयत में कोई हैसियत नहीं चाहे लोग सदियों से नस्ल दर नस्ल उन्हीं की पैरवी क्यों न करते आ रहे हों।

इसलिए हम पर ज़रूरी है कि हम अपने नौजवानों का बोझ हल्का करें, उनकी पाकीज़गी और पाक-दामनी के रास्ते को आसान बनाएँ, और उन पर शादी के ऐसे माली खर्चों का बोझ बिल्कुल न डालें जिनका हुक्म अल्लाह ने नहीं दिया। और जब ज़रूरी कारणों की वजह से तलाक की नौबत आ ही जाए, तो वह भी अच्छे और शरीफाना तरीके से होनी चाहिए, बदला लेने और बदला की आग में जलने के लिए नहीं; ताकि दोनों तरफ़ इज़्ज़त और सम्मान बाक़ी रहे, और सारे जोड़ों का प्रतीक अल्लाह तआला का यह आदेश होना चाहिए:

{وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ} [البقرة: 237]

"और आपस के फज़्ल (एहसान और भलाई) को न भूलो।" (सूरह अल्-बक़रा: 237)

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह मुसलमानों के घरों को आबाद फरमाए, और शौहर-बीवी के दिलों में मुहब्बत और प्रेम पैदा करे।

اللَّهُمَّ أَعِنَّا عَلَى حَمْلِ الأَمَانَةِ، وَجَنِّبْنَا الْغَدْرَ وَالْخِيَانَةَ، اللَّهُمَّ اكْفِنَا بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنَا بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ. اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ، اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَأَذِلَّ الشِّرْكَ وَالْمُشْرِكِينَ، وَأَرْغِمِ النِّفَاقَ وَالْمُنَافِقِينَ، وَانْصُرْ دِينَكَ وَكِتَابَكَ وَسُنَّةَ نَبِيِّكَ وَعِبَادَكَ الْمُؤْمِنِينَ. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ، وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ، الأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالأَمْوَاتِ، وَوَفِّقِ - اللَّهُمَّ - أَمِيرَنَا وَوَلِيَّ عَهْدِهِ لِهُدَاكَ، وَاجْعَلْ أَعْمَالَهُمَا فِي طَاعَتِكَ وَرِضَاكَ، وَاجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِناً مُطْمَئِنًّا سَخَاءً رَخَاءً، دَارَ أَمْنٍ وَإِيمَانٍ وَسَائِرَ بِلَادِ الْمُسْلِمِينَ.

"ऐ अल्लाह! अमानत उठाने में हमारी मदद फरमा, और हमें धोखे और बेईमानी से दूर रख। ऐ अल्लाह! हमें अपने हलाल के ज़रिए हराम से बेनियाज़ कर दे, और अपनी दया से अपने सिवा हर एक से बेनियाज़ कर दे। ऐ अल्लाह! हमारे दिलों

में ईमान को महबूब बना दे और इसे हमारे दिलों में सुसज्जित कर दे, और कुफ़्र, गुनाह और नाफरमानी को हमारे नज़दीक नापसंदीदा बना दे, और हमें सीधे रास्ते पर चलने वालों में शामिल फरमा।

ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को ग़लबा दे, शिर्क और मुशरिकों को ज़लील कर, मुनाफ़क़त और मुनाफ़िक़ों को रुस्वा कर, और अपने दीन, अपनी किताब, अपने नबी की सुन्नत और अपने मोमिन बन्दों की मदद फरमा।

ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों, और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों को माफ़ फरमा, चाहे वे ज़िंदा हों या वफात पा चुके हों। और ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-ए-अहद को अपने पसंदीदा रास्ते की तौफीक अता फरमा, और उन दोनों के आमाल को अपनी इताअत और खुशी के मुताबिक बना दे, और इस मुल्क को अमन, सुकून,प्रचुरता और खुशहाली वाला तथा अमन-ओ-ईमान का केंद्र बना दे, और सारे मुस्लिम मुल्कों को भी।"

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी